Indian J. Soc. & Pol. 05(02):93-94:2018 **ISSN: 2348-0084(PRINT)**
UGC List No. 47956 (Till May 2,2018) **ISSN: 2455-2127(ONLINE)**

मुंशी प्रेमचदः आदर्श और यथार्थ का समन्वय

कर्मजीत सिंह[1a]
[a]असि0 प्रोफेसर– हिन्दी, मर्यादा पुरुषोत्तम पी0जी0,कालेज भुड़सुरी, रतनपुरा–मऊ, उ0प्र0 भारत

ABSTRACT

प्रेमचन्द ने अपने साहित्य में आदर्श और यथार्थ का सुन्दर समन्वय किया है। उन्होंने साहित्य को जीवन की आलोचना तो माना किन्तु इसके साथ ही एक कदम आगे बढ़कर उसे आदर्शवादी भी बनाना चाहा। उन्होंने स्वंय प्रगतिशील लेखक संघ के अधिवेशन मे अपने रचना सिद्वान्तो को आदर्शोन्मुख यथार्थवाद कहा। उनका मानना था कि मानव वो है जो गिरकर उठ जाए। मानवीय कमियाँ हों किन्तु एक भला इन्सान बनना उसका मुख लक्ष्य हो। उनके अनेक कहानी, उपन्यासों के पात्र ऐसे हैं जिन्होने गिर–गिर कर सम्भलना सीखा है। प्रेमचद ने समाज की विसंगतियों, विषमताओं, आतंक और अन्याय को मिटाने का प्रयास किया था। इसी से उनके उपन्यासों में यथार्थ के साथ–साथ आदर्श का बखूबी चित्रण हुआ है। मनुष्य में देवत्व को तलाशने की धारणा में उनका विश्वास अटूट था। उनकी दृष्टि यथार्थ पर खड़ी है, पर अंत तक पहुंचते– पहुंचते वह आदर्श की ओर उन्मुख हो जाती है। 'नमक का दारोगा', 'पंचपरमेश्वर', 'बड़े घर की बेटी', 'मर्यादा की बेदी', 'जुलूस', 'मुक्तिमार्ग' इस पड़ाव की महत्वपूर्ण कहानियाँ हैं। 'ईदगाह', बड़ेभाईसाहब', गुल्ली–डंडा' आदि कथाओं से और आगे बढ़कर प्रेमचद ने भारतीय परिवारों के पराम्परागत मूल्यों की निस्सारता का दर्शन करवाया है। 'कफ़न', बूढ़ी काकी', 'पूस की रात', इत्यादि यथार्थ के धरातल पर खड़ी दिखाई देती हैं। इस तरह प्रेमचद पहले आदर्शोन्मुखी यथार्थ का अपना ध्येय बनाते हैं पर बाद मे सच्चाई के अत्यंत करीब आते गये हैं। वे यह दिखलाना भी नही भूलते कि मनुष्य को दानव बनने में समाज और प्रतिकूल प्ररिस्थितियाँ हैं, किन्तु आदमी के भीतर देवत्व होता है।

***KEY WORDS:** प्रेमचन्द, हिन्दी कथा साहित्य, आदर्शवाद, यथार्थवाद*

''प्रेमचंद की कहानियों में मूल चेतना बिन्दु कोई समाजिक आदर्श है, जो यथार्थ के तनावों के भीतर से गुजरता हुआ स्थापित होना चाहता है। इसी को प्रेमचद ने आदर्शोन्मुख यथार्थवाद कहा गया है। यात्रा यथार्थ की है और समापन आदर्श में है।''(नरेन्द्रमोहन, पृ0197) प्रेमचद ने अपने समय के संक्रमण को गहराई से पहचाना और उस पर गम्भीरता से लेखनी चलाई, जिसको समयानुकूल समझते हुए अपनाने और स्वीकार करने की आवश्यकता है। ''प्रेमचद ने यथार्थवादी कथाकार धर्मिता तो निबाही है, किन्तु वे अपनी रूचि–अरूचि से अलग नही रह पाए हैं। अर्थात वे वर्तमान काल के क्रूर यर्थात के एहसास तक ही सीमीत न रहे। वे निर्णायक के उस विवेक को भी संजोए रहे जो इस यथार्थ की मानवीयता, अमानवीयता, श्रेयस्करता, विग्रहणीयता, आदि की पहचान कराता चलता रहा।''(वही पृ0198)

समरसेटमाम ने खुद लिखा है कि वे महान लेखक इस लिए नही बन पाए क्योंकि उन्होने जनता को मन से प्यार नही किया। माम के इस असफलता का जो कारण था, प्रेमचद के विपरीत आचरण ने उन्हें महानता के शिखर पर पहुँचा दिया। उन्होने जनता को तहेदिल से प्यार किया और यही उनकी सफलता की कुन्जी है। ''चरित्र–चित्रण, कथानक, गठन वातावरण आदि तो किसी कहानी की सफलता को परखने के लिये केवल सामान्य कसौटियाँ हैं, किन्तु विश्व साहित्य में जब कथा कृतियों की महानता का निर्णय होता है तो कलापूरक उपकरण छूट जाते हैं। वहॉ तो केवल मानवीय संवेदना की व्यायापकता ही टिक पाती है। सब कुछ हो और एक मानवीय संवेदना न हो तो सारी रचना व्यर्थ लगने लगती है। चरित्र चाहे जिस समाजिक स्तर के हों, और समस्या जितनी वैयक्तिक हो किंतु जनता को प्यार करने वाले कथाकार की कथाकृति में किसी न किसी प्रकार मानवीयता का वह आलोक झलक जाता है।''(उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द, पृ0 63.64) किसानों की बेचारगी और सामाजिक संपृक्ति तथा छटपटाहट के बावजूद प्रेमचन्द के किसान की पीड़ा 'गोदान' के प्रो0 मेहता के शब्दों मे इस तरह व्यक्त होती है, ''इनकी दशा इतनी दयनीय क्यों है? वह इस सत्य से आंखे मिलाने का साहस कर सकते थे कि इनका देवत्व ही इनकी दुर्दशा का कारण है। उनकी आत्मा जैसे चारों ओर से निराश होकर अब अपने अन्दर ही टांगे टोड़कर बैठ गई है। उनमें अपने जीवन की चेतना ही जैसे लुप्त हो गई है।''(प्रेमचन्द, पृ0257) इस यथार्थ के सामने प्रेमचन्द की इच्छा है कि किसान विद्रोह करें पर उनका किसान जड़ता की सीमाएं लांघ चुका है। होरी धनिया से कहता है कि ''जब दूसरों के पावों तले अपनी गर्दन दबी हुई है तो उन पावों को सहलाने में ही कुशलता है।'' यहां कथाकार यथार्थ से रुबरु हो छटपटाता है और आशा करता है कि एक सीमा तक सत्याग्रह अवश्य किया जाना चाहिए ताकि मुक्ति मिल सके–जड़ता से, प्रतिकूलताओं से, शोषण से।

1: Corresponding Author

प्रेमचन्द सदैव समतामूलक समाज के पक्षधर थे। भेदभाव से दूर एक आदर्श समाज की स्थापना उनका लक्ष्य था । धार्मिक ठेकेदारों से चिढ़कर उन्होने लिखा कि, ''क्या मंदिरों के पुजारियों और मठों के महन्थों से हिन्दू जाति बनी हुई है। पूजा करने वाले भी रहेगें, या पूजा कराने वाले ही मंदिरों को स्थाई रखेंगे।''(प्रेमचन्द,पृ0448)

उन्होने यहां तक लिखा कि–''अगर आपके देवता ऐसे निर्बल हैं, कि दूसरों के स्पर्श से अपवित्र हो जाते हैं, तो उन्हे देवता कहना ही मिथ्या है। देवता वह है, जिसके सम्मुख जाते ही चाण्डाल भी पवत्रि हो जाय''(वही पृ0452) प्रेमचन्द का हर सम्भव प्रयास था कि राष्ट्र उन्नति के पथ पर आगे बढ़े। 8 जनवरी 1934 को उन्होने इसी सोच को आगे बढ़ाते हुए लिखा कि, ''पुरोहित के प्रभुत्व के दिन अब बहुत थोड़े रह गए हैं और समाज तथा राष्ट्र की भलाई इसमें है कि जाति से यह भेद भाव, यह एकांगी प्रभुत्व, यह चूसने की प्रवृत्ति मिटाई जाय, क्योकि जैसा हम पहले कह चुके हैं, राष्ट्रीयता की पहली शर्त–वर्ण व्यस्था, ऊॅच–नीच के भेद–भाव और धार्मिक पाखण्ड की जड़ खोदना है।''(वही पृ0476) गांधी के आर्दश और सकारात्मक पक्ष के साथ चलते हुए उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द ने सदैव यह चाहा कि कुरीतियों से मुक्त एक नए समाज का संगठन किया जाय ताकि इन्सान की इन्सानियत बची रह सके।

जाति व्यवस्था के पक्ष में दिये जाने वाले समाजिक परनिर्भरता तथा समरसमता के तर्क की भयावह सच्चाई को व्यक्त करते हुए 'ठाकुर का कुऑ में गंगी का पति कहता है,'' बाभन देवता आशीर्वाद देंगे , ठाकुर साहब लाठी मारेंगें, साहु जी एक का पॉच लेंगे। हम लोगों का दर्द कौन समझता है। हम तो मर भी जाए तो दुआर पर झाकनें नही आते, कंधा देना तो बड़ी बात है।''(प्रेमचन्द रचनावली, प्र0283) यह प्रेमचन्द के पात्रों की पीड़ा नहीं बल्कि इन विसंगतियों से संघर्ष करता उनके मन की पीड़ा है। उनकी कृतियों को पढ़ने के बाद हमारी सकारात्मक सोच के बल पर जीवन के यथार्थ से जो सामना होता है उसके प्रति स्वीकारात्मक दृष्टिकोण बनता है और यही उनके यथार्थता की सफलता है।

''प्रेमचन्द की कहानियां एक लम्बे विकास क्रम को घेरती हैं। घटना से मनोविज्ञान और मनोविज्ञान से यथार्थ प्रेमचन्द की कहानियों का विकास क्रम बहुत कुछ इसी योजना के अनुरुप है। पहले विकास स्तर पर प्रेमचन्द की 'बडे घर की बेटी' जैसी आर्दशवादी सुझाव परक या समाधानपरक कहानियां हैं, 'रानीसारंधा' जैसी कहानियां जो एतिहासिक रोमांस और मानवीय आदर्श के संघटक से निर्मित हैं और स्थूल इतिवृत्त का निर्वाह करती है। दूसरे स्तर पर 'ईदगाह', बूढ़ी काकी' जैसी मनोवैज्ञानिक कहानिया है जो कथा की तरह कही कयी हैं, फिर भी मनोवैज्ञानिक जटिलताएं जिनका चरित्र बनाती हैं। तीसरे स्तर पर 'पूस की रात' 'कफन' जैसी यथार्थवादी कहानियॉ है, जिनमे यथार्थ की कठोरता ही कलात्मक तटस्थता तथा अचूक संगठन में प्रत्यक्ष है। मानवीय आचरण का आशा या निराशा की ओर उन्मुख होना महत्वपूर्ण नही हैं।–महत्वपूर्ण है घटना की यथार्थवादी परिणति जो स्वंय ही अपना कलात्मक प्रतिमान लेकर आती है।''(श्रीसाने, पृ091.92) कहानी जगत के परिप्रेक्ष्य में प्रेमचन्द के प्रति डॉ0 परमानन्द श्रीवास्तव का यह मानना है कि, 'प्राचीन हिन्दी कहानी एक प्रकार के अद्भुत तत्व से रोमांचित और नीति से आक्रान्त थी। इसमें यथार्थ का प्रश्न ही नही था। इसका अद्देश्य था उदात्त, शाश्वत मूल्यों की उद्भावना तथा रहस्यपूर्ण चमत्कारों की सृष्टि के लिए अद्भुत कथानकों का निर्माण। हिन्दी में कहानी का वास्तविक परिप्रेक्ष्य प्रेमचन्द से ही प्राप्त होता है।''(श्रीवास्तव, पृ0207)

वस्तुतः हिन्दी कथा साहित्य में प्रेमचन्द का अवतरण युगान्तकारी है। उनसे पूर्व कहानी को केवल मनोरंजन की वस्तु माना जाता था, किन्तु प्रेमचन्द ने उसे जीवन का चित्र बना दिया । उपन्यास को तो वे मानव–चरित्र का चित्र मानते ही थे, कहानी भी मानव चरित्र के किसी अंश विशेष का चित्र ही है। साथ ही प्रेमचन्द की धारण थी कि न केवल कथाकार अपितु प्रत्येक साहित्यकार के लिए यह अपेक्षित है कि वह अपनी कृति द्वारा सामाज के यथार्थ रुप को प्रतिबिम्बित करता हुआ कुछ दिशा–निर्देश करे, कुछ सन्देश दे। अभिव्यक्ति केवल अभिव्यक्ति के लिए न हो, अपितु उसके द्वारा निर्माण की प्रेरणा भी प्राप्त हो। उनके विचार से सहित्यकार उस व्यक्ति के समान है, जो अन्धकार में मशाल जलाकर पथभ्रष्ट लोगों को मार्ग दिखाता है। इसी विचारधारा से प्रेरित होकर वे कहानी रचना की ओर अग्रसर हुए। जीवन के हर क्षेत्र में क्रांतिकारी विचार प्रेमचन्द की सांस्कृतिक देन है जिन्होने समाज तथा साहित्य को दिशा प्रदान की तथा जनसंस्कृति से वियुक्त साहित्य का पुनः लोक जीवन से योग कराकर युग का प्रतिनिधित्व किया। उन्होने कभी पुरातनवादिता को स्वीकार नही किया हमेशा उस पर प्रहार ही किया तथा नवीन जनवादी सांस्कृतिक विकासशील चेतना का प्रतिपादन किया। अतः प्रेमचन्द हमेशा हमारे युग विशेष की में सांस्कृतिक चेतना के प्रतीक अग्रदूत के रुप में चिर स्मरणीय रहेंगे।

संदर्भ

प्रेमचन्द *विविध प्रसंग भाग–2*

प्रेमचन्द रचनावली–खण्ड–15,

प्रेमचन्द, *गोदान*

श्रीसाने *प्रेमचन्द्र एक सिंहावलोकन*

श्रीवास्तव, परमानन्द *हिन्दी कहानी की रचना प्रकिया*

नरेन्द्रमोहन, *प्रेमचन्द्र का कथा संसार*